



# प्रतिवेदन के स्वर

श्री शम्भुदयाल सकसेना



नवयुग-ग्रन्थ कुटीर  
बीकानेर

प्रकाशक :

नवयुग ग्रन्थ कुटीर

बीकानेर

प्रथम मुद्रण

सन् १९६४

मूल्य

चार रुपया

आयरण सिल्पी

दाशाराम गोस्वामी

मुद्रक :

एन्क्रेणनस प्रेस

बीकानेर

## आमुख

'प्रतिवेदन के स्वर' में इस युग की रचनाएँ हैं,— यह युग जो गत महायुद्ध के बाद से आरम्भ होना है। इसमें जीवन के मूल्य बड़ी तेजी से बदले हैं। मनुष्य और उसके रहन सहन, राज्य और समाज की विधि व्यवस्थाओं, में जितना परिवर्तन इस काल में आया है उतना शायद ही कभी आया हो। आकाश की उल्काओं की तरह क्षणक्षण में सत्ताधरों का प्रकाश जलता बुझता रहा है। कला और साहित्य में उसका प्रतिबिम्ब झलकना स्वाभाविक है। नई विधाओं ने उसी त्वरा के साथ साहित्य और कला में प्रवेश किया और अधिकार जमाया है। पुरातन ने नूतन के लिए मार्ग छोड़ा है और जाते जाते उसे अपना आशीर्वाद दिया है और साथ ही यह सकेत भी करता गया है कि वह अपने पीछे आनेवाले नये युगों की धारणाओं के प्रति वैसा ही उदार बना रहे। मोह-ममत्व के बंधन में अपने आपको बंधने न दे। निर्लिप्त भाव से आगत का स्वागत करने के लिए तत्परता दिखाये।

युगधर्म के प्रति सचेष्ट पाठक पूर्व तैयारी के बिना भी सहज भाव से इस संदेश को आत्मसात कर सके हैं। परंपराओं के मोहजाल ने उन्हें विभ्रमित नहीं किया है। प्रगति प्रवाह में जो प्रखर वेग उमड़ा है कण कण जैसे उसी की राह देख रहा था। कुछ भी असंभावित नहीं। कुछ भी अपूर्व नहीं। नियति-नियामक के रथ-चक्र की आरामों के साथ घूमता हुआ वह उसी समय और उसी रूप में आया जैसा उसके लिए सृष्टिविधान था। इस युग का काव्य वष्यवस्तु, वृणन और छन्द सभी और से निवन्ध

होकर आगे बढ़ा है तो भी किसी को शिकायत नहीं हुई है। कवि का प्रतिवेदन जीवन का प्रतिवेदन है, युग का प्रतिवेदन है। उसे वाणी देने मान का काम उसका है जो उसने यदि पूरी ईमानदारी से किया है; उसे रहस्य में खो जाने नहीं दिया है तो उसने कतव्य का निर्वाह करने में कोई कसर नहीं रखी है। अब उसे सुनना और समझना लोकजीवन का काम है।

वीरानेर  
१७ मार्च १९६४

शभूचयाल सकसेना



प्रतिवेदन के स्वर



## अनुक्रम

१	मूल्यांकन	३
२	अतरिक्ष यात्रा	५
३	स्तालिन एक अभिव्यक्ति	६
४	बगूला	१२
५	तस्कर	१६
६	अजगर और चांद	२२
७	भाषा विवाद	२४
८	कगार	२७
९	पनघट	३२
१०	मिथ्याचार	३७
११	नाला	४०
१२	नफा नुकसान	४४
१३	लोकतंत्र	४६
१४	आशवासन	५४
१५	भावात्मक एकता	५८
१६	ये उल्लू, यह चांदनी रात !	६३
१७	नई कविता	६६
१८	एक किरण	६९
१९	दो बहनें	७०
२०	अतीत स्मृतियाँ	७४
२१	त्रियोगिनी	७६
२२	बच्चन कवि	७८
२३	प्रनिदान	८०



२४	उवशी और दिनकर	८२
- २५	स्वप्न-पाक्ष्य	८४
२६	चेतावन	८८
२७	चीन की मृत्यु पर	९१
२८	सेना की हुकार	९४
२९	हिन्द की सेना	९५
- ३०	भारत एक परिचय	९६
३१	रणागण मे	९८
३२	स्वागत, युद्ध ।	१००
- ३३	स्वर्ग का आदर्श	१०१
- ३४	हेमरशोल्ड	१०४
३५	गुटर गू	१०७
३६	कैनेडी के निघन पर	११०
- ३७	कवि और काव्य	११२

प्रतिवेदन के स्वर



## मूल्यांकन

जीवन की रंगीतियाँ  
सांस्कृतिक कायदों व  
रंगारंग विधान में,  
प्रस्तुत करती हैं  
रीतिकालीन कवियों की  
रूपाजीवी मनोवृत्तियाँ  
केवल उस भीने पर्व को हटाकर  
जो राधाशुक्ल की युगल मूर्ति के प्रति भक्तिभावना का  
प्राडंबर बनाये थीं ।

रामनामो दुपट्टे के भीतर  
छूँघट में,  
वो कजरारे बाँके नयन  
उसी पुरानी गाराब की  
नई घोटलों में  
नये लेखिलों के साथ पेश करते हैं ।  
यह एक जिद्दमत्ता है  
यि हम उराकी निन्दा करते हैं  
और इसे सबके गले उतारने के लिए  
जिहाद व नारे लगाते हैं !

अब भी

उतनी ही रहस्यमय हैं

जितनी चिन्तनशील उपनिषद्कार महर्षियों के समय थीं !

कार्ल मार्क्स, बेचारा,

उन गहराइयों में भ्रमण से

डरता ही रहा, डरता ही रहा,

मानव हाड मांस का पुतला

एक अद्भुत त्रिकोण है !

अध्यात्म,

इतिहास और

अपर प्रवृत्तियों के कोणों में

कोई समकोण नहीं ।



## अन्तरिक्ष यात्रा

युग युगों से अन्तर मन में  
जग रही थी अकांक्षा बड़ी  
अन्तरिक्ष के सीमाहीन नीलोदधि में  
बीन बीन से रहस्य छिपे हैं इस सृष्टि के ?

पक्षियों के पक्षों की कल्पना पर  
जीवन के प्रथम प्रभात से  
मन मग्न रहता रहा उड़ानें  
अहरह ।  
अन्तरिक्ष-यात्रों की कथाओं का ज म  
कला और साहित्य में  
दुनियाँ की सभी जातियों में,  
सभी देशों में,  
पहले दिन से ही हुआ था ।

सभ्यता की प्रगति के इतिहास के  
हर पृष्ठ पर  
यह अदम्य अकांक्षा  
सजीव बनी रही ।  
प्रयत्नों ने त मानी हार,  
लगा रहा अनवरत  
अन्तरिक्ष भेदन म

मानव,

नित्य मिलता रहा

निमग्न उसने अनंत नीलाकाश से ।

घरती पर डोलता भी,

काय व्यस्तता के बीच

बिना पलों का प्राणी,

आकुल हृदय से विचरता वहीं और रहा ।

जीवन और मरण की समस्याएँ ,

मरणोत्तर दुनिया की गुत्थियाँ,

उसमें पर तु सुलभों नहीं

काल का विंगल पट पर

गहरी छुदी हैं वे रेखाएँ

बिना की सलबटें

भाल पर उभर उभर

कहती कहानी उस जीवन की,

जिसमें

राल में ज्यों स्फूर्ति

दबा घना रहता सजीव ।

घातत असंभव विचार हुआ संभव,

बठोर घरा छोड़

उदा मानव गगन में ।

लुप्त गप बपाट उस अगम्य घातरिक्ष के,

महती सभावनाओं की भाँजी के साथ

एक अद्भुत गुरगा जग

घातमानी आवरण में

जीवन की नई कथा  
 नई कथा,  
 नये उपाहारा  
 नये अध्याय,  
 लेकर हुआ प्रस्तुत दीपित क्षितिज पर ।

गागारिन, नेपड, प्रिसम ने,  
 तीतोव ने,  
 प्राणों की धाजी पर  
 अजेय अंतरिक्ष में प्रवेग कर  
 मानव की विजय के गुनहरे लेख  
 गूँथ अयकाश की  
 आकारहीन भित्तियों पर  
 ग्राह्यता की अमिट स्थाही रे,  
 लिखकर यशाजन किया महान ।

गम्य अंतरिक्ष,  
 स्वप्न सत्य,  
 निस्सीम विस्तार  
 निबल अशक्त जीवधारियों को अनायास ।  
 अनादि ओ अनन्त सृष्टि  
 मुक्त आज,  
 केवल समय की बात शेष  
 जब जीवन धरित्री का  
 ग्रहों, नक्षत्रों में उगायेगा  
 नस्लें नई नई ।

— १३ —



अन्तरिक्ष यात्रा मे  
 जाति, धर्म, राष्ट्रवाद के  
 मील के पत्थर  
 काम नहीं देंगे ।  
 नये मापबडों की होगी सृष्टि,  
 नया समाजवाद उस विस्तृत जगत् मे  
 एक नीहारिका बना घूमता रहेगा  
 भविष्य के नभोमण्डल मे  
 शत सहस्र युगों पयत्त  
 एक नूतन अकल्पनीय सस्था का  
 होने को है जन्म शीघ्र ।

अन्तरिक्ष यात्रियो,  
 परम्परागत विश्व की भाषाओं में  
 क्या तब तुम्हें स्वाव आयेगा ?  
 अज्ञाने अज्ञाने जीवन ससग से  
 क्या बनेगा, क्या बिगड़ेगा ?  
 इसको सोचना भी क्या तुम्हारे लिए नाशय होगा ?  
 महामहिम, तुम कितने  
 अतीत के रहोगे, कितने भविष्यत् के ?  
 बसा यह यतमान होगा  
 कभी सोचा है तुमने ?



## स्तालिन एक अभिव्यक्ति

सौहृदुदय स्तालिन,  
द्रुम सुध्दा सोविप्रत राघ के गिल्मि प्रवर !  
तेनिन के सापी, सहकर्मी,  
माक्सयाद क स्तम्भ सुहृद,  
प्रावेग और इगित जिनके थे  
स्वत सिद्ध प्रमाण,  
धतर्कित तक  
सडन मडन से परे  
अप्रतिहत दीप्ति बिबु क्षत्तिरव !

उठी जो जंगली बटकर गिरी  
प्रांज फूटी  
सिर उतर गया तरकाल,  
गुट्ट टूटे, पश्यत्र विफल  
दप विवलित,  
विश्वास विदीण  
दमन का अभिनय चक्र  
चला, शमन हो गये  
विरोधी तत्व,  
बुद्ध प्रा,  
फासी,  
नात्सी दस्यु,

पञ्चमांगी,  
 सन्नराजी,  
 पू जीवाद परक  
 व्यक्तिवादी,  
 दक्षिण पथी  
 नाना रूपों नामों के जनशत्रु  
 चंचल इगुझ से राष्ट्र  
 वामपक्षी  
 बुलारिन, जिन्नोंबीच से शत गत भ्रष्ट पुरुष ।  
 तुम्हारी कृपा कोर से  
 सख्यातीत तर मुण्डों के माल्य मे  
 अग्रणित कामरेडों को भी मिला स्थान  
 विद्रोही किसानों,  
 अस्त-तुष्ट धर्मिकों,  
 स्वाधीनचेता बुद्धिवादियों,  
 आलोचक यज्ञानिकों,  
 विद्वानों मे प्रशंसित कलाकारों  
 सदेहगील लेखका  
 अघ्यापकों, छात्रों व दुर्भाग्य के साथ ।

ऐसे अश्रुत महापुरुष के दुर्दान्त  
 होता व रूप म अमर महान स्तालिन ।  
 आज तुम्हारे खूर फौलादी व्यक्तिपरक के प्रति  
 जगती है सहानुभूति,  
 वरुणा विगलित मानव हृदय मे ।  
 जब तुम्हारा शय  
 बपता है उसी भाग्य शेर म  
 जिन्ने सभ सक्ष लोग

तुम्हारे मुँह इगित पर  
बाप कर जुवा गिये गये थे  
प्रमलिन व पीछे  
इतिहास के अंधरे गत में !

सोवियत सघ से तुम्हारी  
सालों लाख मूनियाँ  
जम तोड़ी घोर ट्टाई जा रही हैं  
तुम्हारा नाम इतिहास व पृष्ठों से  
मिटाया जा रहा है नि शेष किया जा रहा है,  
तब तुम विश्व मानव व  
भग्न हृदय में,  
त्रिसे तुमने निदमता से  
कुचला था, जनवाद व नाम पर,  
अग्निमय दृष्टि से निरंतर गलाया था,  
बद भरी राजन बदला क साय स्थान पा रहे हो ।  
अब भी यह तुम्हारी समाधि का फूलों से  
ढक जाता है चुपचाप ।

अज्ञेय के सुनहरे इतिहास से भ्रष्ट  
स्तालिन, विश्व मानव ने  
बावजूद तुम्हारे राक्षसी कृत्यों के  
तुम्हें अमर पुहवों की पवित्र में स्थान दिया है ।

जनवादी समाजवाद व म अष्टा  
दुर्वाणों के रूप में तुम  
युगयुग पर्यन्त अमर हो !

प्रतिबदन के स्वर ]

## बगूला

घरती से घ्रासमान तक  
हवा में बंद का उफान  
मरोड और ऐंठन  
प्रसावपीडा के समान ।  
धातावरण में घुटन  
हृदय में घडकन  
बाहर बगूला एक घूमता जा रहा,  
घूमता जा रहा,  
धूल, फूस, पत्तियां  
बली बुभी बीडिया  
कागज की बिन्दियां  
कपडों की धज्जियां  
घोर न जाने क्या कुछ  
जो भी घागया उसकी सपेट में  
यही उड़ता, चक्कर काटता  
बला जा रहा, बला जा रहा ।

कुतुबमीनार का घाबार  
पृथ्वी से बाइसों तक  
हजारों गज ऊंचा  
उमटना घुमटना, चक्करे लेता  
बाघुमइत का भेंबर यह

बरती के बाहर प्रचाक उठ लडा हुआ ।  
 देखते ही देखते होगया पहाड घट  
 घा गया फर्ती से उसमें प्रसोम वेग ?  
 पेड़ों को भङ्गभोर  
 पौधों को मरोड  
 सूखी टालियों को तोड फोड  
 छेतों में धूमता  
 बाघों में भूमता  
 सलिहानों को रो दता  
 गांधों को उजाडता  
 नदियों के पार  
 नालों के पार  
 सडकों के पार  
 भीमाकार बगूला, प्रचंड वात्याचक्र,  
 हटराता, प्रलय मचाता  
 जिस ओर से निकल गया  
 ध्वस ओर विनाग के डेर छोड गया असह्य !

मानव हृदय में भी उठा वात्याचक्र एक  
 सवियों की मायताए  
 सहस्राब्दियों की रुदियां  
 युगों के सस्कार  
 आचार विचार  
 सयकी उल्लाड ले गया  
 उजाड कर गया वह पल मात्र में ।  
 पुराने मूल्य  
 सडे गले दृष्टिकोण  
 प्राति की सपेट से घूर चूर हो गये ।

पढ़ गये जो भी व्यवहार का राह म ।  
 गुमराह करनेवाले पुराण और इतिहास  
 शास्त्र और दर्शन  
 धर्म और आचार  
 नतिक घरातल पर  
 अभिनव कसौटियो पर  
 लोटे हुए साबित,  
 भडक उठा प्रतिरोध

जनता जनादन के  
 विश्वास की नीवें  
 हिल गई अचानक  
 श्रद्धा के महल उच्च  
 षक्के से ढह गये ।  
 ग्राइस्टीन और उसकी विरादरी के लोगों ने  
 माक्स और एंजेल्स ने  
 प्रूथी और बाकुनिन ने  
 लेनिन और त्रोपाटकिन ने  
 स्टालिन और बुखारिन ने  
 विज्ञान और दगन की  
 समाज और जीवन की  
 नई नई व्याख्याओं से  
 आस्था के पुरातन पिरामिडों को  
 भेज दिया रसानल ।

मानव के अतजगत से  
 हुमा आविर्भाव जिस भूचाल का,  
 जिस व्यापारक का,

उससे उसट पलट होगया  
सृष्टि रचना का स्वरूप !

बाहर के बगडर से  
भीतर के बगूले की होड नहीं,  
जोड नहीं उसका  
बितना बिनाग !  
कसा ध्वस !  
अव्यक्त परिवर्तन !  
निर्माण व अगमगाते चरण,  
ले चले हैं मानव को  
जोषन के खडहर मे से  
दृढता से,  
धय से,  
गदम्य साहस से,  
यहां,  
जहां भविष्य लिख रहा है नई स्तिपियों में  
मुनहरी आशा के नये नये ज्वलंत लेख ।







रातदिन ताने  
 रातदिन तेशर  
 रातदिन बिचबिच  
 नौजवान पडोती से बीबी का सगाप  
 उसे नहीं था खोकार ।  
 लेकिन वह करता क्या  
 मुर्ता और सलवार  
 मुर्दा और गले का हार  
 जुटा सक्ना था आसान नहीं ।  
 दीनदार, पर वह मजबूर था  
 रोजी कमाने का सलीबा उससे दूर था,  
 देवा था उसने न  
 आमदत का कोई द्वार ।

उस अभागे बिा  
 जागा अघानव उसका भाग  
 बीबी की गुप्त आय का जब मिला उसे सुराग ।  
 गिल्ट और चांदी के जेवर  
 भूटे मोतियों के सतलडे हार,  
 छोट के कुत्ते,  
 साटन के सलवार,  
 देखता रह गया वह अखिं फाट ।  
 एक बार औरत की कमाई मे  
 आग लगाने का हुमा विचार  
 पर खानदान की इज्जत का सवाल  
 उसके था आगे,  
 यह चुपचाप था,  
 था यह लाचार ।

बीनों से, घासों से,  
 घोरों से, सान से  
 पूर मे छिपाये,  
 कयाइ में सुजाये,  
 हँपन में बयाये  
 भ्राभूपण वस्त्र घोर प्रसाधनों का देर किया उसने  
 भ्राग लगा कू कने ली  
 किंतु फिर सोच समझ बटोर लेगया बजार  
 उठाये कई सी रुपये  
 मामदू का लिया कूट  
 जिस पर उसकी धी कई बिनों से भ्राय ।  
 अमदुल हनीफ ने की तस्करों से साठगांठ ।

कत्या सुपारी, कपडा, वालीमिच  
 चावल, धोनी, घुरट की  
 गुपघुप निवासी मे दिया उसने योग ।  
 तस्परता घोर दुस्साहस मे  
 लागडांठ, घोर जोवट मे  
 बेखीफ भ्राना, बेखीफ जाना  
 सोने घोर केसर की पेटियां लाना ।  
 होगया वह मालामाल,  
 होगया निहाल ।  
 अहमदाबाद, बम्बई परों तले होगये  
 मौलवी, पंडित इमाम, सेठ, साहूकार  
 सर्राफ, सतरी, उच्चाधिकारी सभी  
 बडे बडे जो हैं छिपे तस्कर सभ्राट  
 चेहरों पर डाले देश सेवा का नकाब  
 अमदुल हनीफ के मुरीद हैं, हैं पैरोकार ।

उनकी गह पर नवाय बना घूमता है  
 सरे बाजार, किसका डर है उसे ?  
 पीछे जब साफ सुपरा है रिवाज ।  
 घोरत की नजरों में उठा नहीं फिर भी  
 तानों से जजर करती वह निरय उसे  
 दुनिया में विजयी  
 घर में वह पामाल  
 गराव भी कवाय में हुआ भी  
 अंतर की पीडा से पीडित  
 हनीफ का वह अतिम दुःख अभियान ।  
 सड़कों और पगडडियों ने रोका नहीं उसे  
 टोका नहीं घोरों और बीहड़ों ने  
 सेना और पुलिस चौकियों को कर गया पार ।  
 इस फन का था माहिर  
 कि तु वह गया कहाँ ?  
 बाफिला का बाफिला बिना प्रांथी तूफान  
 बिना किसी घटना के आदमी घोर सामान  
 ऊट और पलान  
 हो गये विलुप्त बीच राह में  
 खोज खोज हारा उसे  
 दोनों घोर का जहान ।  
 इतान खो गया !  
 हैवान खो गया !  
 पुलिस रोमांचित है  
 खुफिया हैं हैरान,  
 डाकुओं में सनसनी  
 तस्करों में भूचाल ।  
 अब्दुल हनीफ का न कोई पर मिला सुराग ।

भाप घन उड गया था  
जल हो बहा वहीं ?  
रोक लिया गोपनीय प्यार ने ?  
नहीं, नहीं ।

घनकर रहस्य एक रह गया  
न कह गया, न सुन गया,  
उड सी सोने की सिल्लियों के साथ  
पुलिस फस्टडो मे जो बन गई थी पीतल  
जोडते हैं कोई उसका समय ।  
कोई डिजिटैबल के बेगनलोड कांड मे  
पाते हैं उसका हाथ, जो कि  
सील्ड गोदाम मे पांच सौ टिन  
गोबर और मिट्टी के घोल मे बदल गये थे  
रातों रात, रातो रात ।

एक टुक सिगरेट,  
जिसके लिए होनेवाला था उसका घालान  
पुराने शायबारी का थोक मात्र निकला  
जानते हैं इसको कांग्रेस के प्रघात ।

रोती है हनीफा,  
न कहती है हृदय की बात ।  
बीरान रेगिस्तान मे,  
उसने सपनों मे देखा,  
दफनाया जाते उसे  
उन पाक हाथों से  
जिन पर रक्तरजित होने का न करेगा कोई गुमान ।

साईं और फकीरों ने  
 दरगाह और पीरों ने  
 किया है समर्थन उसकी हत्या का  
 और बताया हीले हीले कानों में—  
 'ये हैं शक्तिगाली लोग  
 चुप रहना ही जेबा देता है,  
 वरना राम कोप का बहर  
 कर रहा है बेबा का इतजार ।'



## अजगर और चांद

स्वेत अजगर सा भीमाकार !

मृत्युरूप बुनिवार

अंतरिक्ष में पसरता रेंगता जा रहा है

भीलो तक सपलप जिह्वा लपकाता

वृज के चांद की ओर ।

लील जायेगा उसे

बिजलीघर की चिमनी के श्यापक बिबर से

कड़ता हुआ पत्थर के कोयलो का गस भरा धुआ, ब्राह् !

सप्या की मोद में भयातुर सा बाल शशि

बादलों के झलमल अचल की ओट ले

भूल चौकड़ी छलाग

ताक रहा

झांक रहा

कांप रहा

सिमट सिफुड बब

दाकित चकित चित्त

स्पष्टित हृदय,

सिहरता सा गात लिए

अब तब जा रहा कराल काल गाल में ।

बसुधा में भीत मन

अगणित सुपाथर हैं

अमृत निचोड लिया कु डलित सर्प ने  
चूस लिया, मूस लिया,  
जीवन का रस, सुषण  
रिक्त मन, रिक्त प्राण  
रिक्त ऐश्वर्य  
रिक्त नभ धानन, प्रतीची का कुसुम गान ।

बिमनी का धुआ, नहीं  
बँचुसी मजगर  
सोत रहा समूल  
पूलों का तोरभ,  
बुडमलों का मृदु मधुर हास  
धक धक भट्टी में कोयला रह य भोक  
ताप तप्त  
प्राण दाय  
सुल बुल भुरियों में भोकते भलबते  
सौम्य मुल राख हुए जा रहे हैं उनके ।  
घरती के चांद से,  
घरों के से प्रसून !





स्वेत अजगर सा भीमाका  
 मृत्युरूप बुनिवार  
 अन्तरिक्ष में पसरता रँग  
 भीतो तक सपत्त जिह्वा  
 बूज के चाँद की ओर ।  
 लील जायेगा उसे  
 बिजलीघर की चिमनी के  
 कढ़ता हुआ पर्यर के कोयल

सध्या की गोद में भयातुर  
 बादलों के भ्रमल अचल  
 भूल चौकड़ी छलाग  
 ताक रहा  
 भाँक रहा  
 काँप रहा  
 सिमट सिक्कुड बब  
 द्यकित चकित चित्त  
 स्पंदित हृदय,  
 सिहरता सा गाल लिए  
 अब तब जा रहा कराल काल

वसुधा में भीत मन  
 अगणित मुधापर हैं

प्रादान प्रदान से ही उनका निहार होता  
 होता उनका परिष्कार  
 शृ गार होता  
 गन्द मय योजना  
 अभिधा लक्षणा ध्यजना  
 रस रीति मलकार  
 भाषा के अनेक द्वार  
 सभी खुले  
 अबाध उनसे प्रयत्न सबका  
 न ऊँच नीच पुष्पाङ्गन का विचार  
 विविध भाषा शैलियों के धर्मों जल से  
 भरता है सरस्वती का जलाधार ।

कौन ऐसी खोली है  
 कौन ऐसी भाषा है  
 जिसका निराला जग  
 जिसका पृथक् विलास क्षेत्र  
 जिसका न किसी से सपक सरोकार ?  
 जातियों, फिरकों, कबीलों के  
 महावन में  
 भाषा लताएँ फलती हैं  
 फलती हैं  
 फूलती हैं  
 हरीभरी डालों के गले लग भूलती हैं  
 करती कुजों की सृष्टि  
 सुरभित फूलों की वृष्टि  
 नित नई नई  
 जहाँ तक सम्भ्रता और सस्कृति की जाती

## भाषा विवाद

भाषा विवाद,  
कसा यह भाषा विवाद !  
मानव का उन्माद  
अनशन श्री' हठबाव  
हत्याए, अग्निकांड,  
ध्वंस, विनाशलीला  
क्या भाषा विवाद क समाधान ?

भाषा साहित्य, गिल्प,  
कला, विज्ञान  
मानव की साधना के प्रमाण  
शांत वातावरण मे हुआ है उनका विधान  
उनके नाम पर सघर्ष,  
उनके नाम पर अनाचार !  
सक्रिय है मानव के अंतर का बरप  
विकास और निर्माण से  
नहीं है उसे रच प्रेम ।

भाषाए नहीं चाहती साम्राज्य लडे करना  
उनको न सत्ता से मोह  
भाषाविज्ञान है प्रमाण  
उनके सहयोग का  
उनके सहभोग का

प्रादान प्रदान से ही उनका नितार होता  
 होता उनका परिणार  
 श्रु गार होता  
 शब्द प्रथ-मोजना  
 अभिधा लक्षणा व्यबना  
 रस रीति प्रलकार  
 भाषा क प्रनेक द्वार  
 सभी खुते  
 अयाप उनम प्रयश सबका  
 न ऊँच नीच छुपाछुपा का विचार  
 विविध भाषा बोलियों के यहाँ जल से  
 भरता है सरस्वती का जलागार ।

कौन ऐसी बोलो है  
 कौन ऐसी भाषा है  
 जिसका निराला जग  
 जिसका पृथक् बिलास क्षेत्र  
 जिसका न किसी से सपक सरोकार ?  
 जातियों, फिरकों, बर्षीलों के  
 महावन मे  
 भाषा लताएं फूलती हैं  
 फलती हैं  
 फूलती हैं  
 हरीभरी डालों के गले लग भूलती हैं  
 करता कु जों की सृष्टि  
 सुरभित फूलों की वृष्टि  
 नित नई नई  
 जहाँ तक सभ्यता और सस्कृति की जाती हृष्टि ।

उनमें न है कहीं विवाद  
उनमें न छिपा साम्राज्यवाद  
हीरे के पीछे बीड भागना  
न जिसका अस्तित्व कहीं  
धर्य है, है बेकार  
बढ़ने दो उनको  
अपने ही खाद पानी से  
रुद्ध न करो भाषाजगत का नसगिक व्यापार ।



## कगार

नदी की प्रचंड प्रखर धारा ने  
यौवन की छांधी मे  
सब कुछ विषा यहा  
किनारे पर लडा कगार  
मूक  
स्तब्ध  
दुनिवार उलट प्रेम से जडीभूत  
रोक रखने क लिए विद्युत्प्रवाहिनी को ।

प्रणय सकेत का कर तिरस्कार  
किसी के स्वप्नों में लाई  
किसी की याद मे भीगी  
रोमांचिता  
उर्मिला  
रची प्रेम रग मे  
उच्छ्वल उमग मे  
उद्दाम गति नर्तिका  
गताश्रुगतिकता त्याग  
द्वुतगति खली विषयगामिनी !

आश अभिलाष लिए  
 नयन मू व  
 ध्यान लग्न  
 सोचता लडा फगार  
 बाहों से गई निकल  
 यसल वायु सी विकल  
 प्ररोहिता प्रहृषिता  
 छोड गई निचुल निकु जों के  
 कानों मे कोई संदेश  
 खजूरवन के पास है अयश्य उतावा राघान ।

शत राहस्य वर्ध की  
 प्रतीक्षित उत्कठा लिये  
 नवी सट शयन कर रहा या घनी छाया मे ।  
 वे कदम्ब,  
 वे तमाल,  
 वे करील,  
 वे पलाश  
 आज हूँ विमुग्ध  
 उस लीलामयी सलिला के आतुर पलायन से ।  
 कणमूल मे कगार  
 सट कर सुन रहा  
 बज रही धुन जो क्षितिज के परे कहीं ।  
 घ्रा रहीं बिलोल स्वर सहरिया  
 अजस्र गति  
 अन्तर मे उनके है कोई दग्ध वेदना ।  
 मुडकर देखने की साथ भरी  
 स्वाद भरी

घाय गरी

नाय भरी

चबल चपल हृष्टि

विजडित रह गई

बास हरे बोहड बहारों मे ।

भाग्य की विडवना, लडा बगार

कोई नहीं पूछता है कता प्यार,

कितना प्यार,

कय का प्यार,

अंतर मे

रग रग मे

नस नस मे ?

हो रहे जीवन के ध्येष्ट क्षण विगष्ट प्राण

रातदिन साँध्य प्राण

सूख गया उसके हगों मे प्रयात ।

एक स्वण बल्लरी

गुण से उभक भाँव

राय हो, हो दयाव

गानी कठहार

राती अनजानी रात मे ।

लकित बगार

ए वीणा पर स्वरों को साथ

उठा मिलन राग

वन महक उठा

प्रवेश भकृत

के स्वर ]



भू से गगन तक  
प्रणयपथ चन्द्रकिरणों से रग गया  
घवल, घवलतर ।

चौ क उठी सरित्  
लहरिया चिहूँक उठीं  
भ्रद्भुत शृ गार देख  
ककाल मृत्तिका का खडा था विरूप सा  
धि-खड सा  
न जिसकी ओर दृष्टि जाती थी कदापि ।  
यौवन का कसा अप्रभूव स्पश-वान है !  
रूप रस गंध का समवित्त कलेवर  
खीबता है अनायास मन उधर  
उभार आज सहरोँ मे आ रहा  
उफान मन मे,  
आकृता कल्लोलिनी का वेग थम गया,  
जम गया प्रवाह  
मौन हो गया उसका नृत्य  
धिरकन पर उसकी  
सिहरन का पड गया पाग ।

मुकुलितता लता के स्निग्ध स्नेह में विमुप  
कगार नहीं देख पा रहा परंतु  
परिषत्तन का घात ज्वार ।  
बाल की विडम्बना  
विषट भाग्यचक्र गति !

मलिका भुजगिनी विलोम गति  
 बक्र हृष्टि  
 रुष्ट कुक्कवारती  
 पटवती सहस्र का  
 काटने सगी बगार  
 भूमती सता का सोहाग  
 उजाड़ने मे उसने सगा दिया अनत बल  
 किन्तु प्रणयी युगल न भीत हुए  
 मौत के गले सग खड़े रहे, खड़े रहे ।  
 नाम गेव करके भी उनका,  
 न उनका प्यार  
 यहा सही सरिता की क्रुद्ध धार ।  
 निजम मे नि ह्यन काल बीणा पर  
 भाव भूत है उनका वह अनन्य प्रेम ।  
 सुना जा सकता है दिन मे किसी समय  
 धरतर सगीत उस शाश्वत प्रणय का ।



## पनघट

कर दिया बराबर सविधान ने सबको,  
सबको समान अधिकार प्राप्त  
कोई न बड़ा छोटा रहा  
धर्म निरपेक्ष भारत में ।  
कीमों और जातियों का  
मजहब और संप्रदायों का  
युग गया बीत ।  
हिंद महासागर की गोद में  
राष्ट्र—एक महाराष्ट्र जन्मा ।  
कलाश से कुमारी तक  
खभात से छाडी तक  
एक सूर्यता में बढ  
सदियों से बिलखी मानवता को  
मिला एकता का नया शास्त्र !

एक जुट  
एक ध्यान  
एक प्रण  
एक प्राण  
एक मन  
एक तान  
उभरा भारत महान

धरती से प्राप्तमान सब दर्शगोचर  
 जगह जगह,  
 यही तम्य, यही ज्ञान  
 मुनते हैं ऊँच नीच का विधान  
 भूतवर मानव विकास मे  
 जुड़ गया है यहाँ का बण बण, प्राण प्राण ।  
 गर्भ से उठा भूम  
 पूषकों का हुजूम  
 छोड़ छोड़ स्वयं का निरयानन्द  
 आगमा वह भारत भू पर ।

नया नया पनघट  
 नलों की नई टोटियों का जमघट  
 तपि पीतल के बल्ल  
 टोन के डोल और लोहे के बाल्डे  
 मिटटी के घड़ों से सडने की संपार  
 फूटते कपाल  
 घडे चूर चूर होते  
 पनघट पर कायम है अभी  
 ऊँच नीच का विधान ।

कौन कर सक्ता है हिम्मत यहाँ,  
 राजा जहाँ का है सडा गता समाज ?  
 हिंदू, मुसलमान,  
 सामी और मोची  
 सिक्ल और घुड़,  
 बल्लग बल्लग टोटियों पर अ कित थे

जातियों के नाम ।  
 मिटा दिया उनको नये शासन ने परगु  
 मन से मिटा नहीं  
 यह भेद भाव  
 क्यों का क्यों कायस है ।

रुद्धियों में बढ  
 ज्ञान गरिमा शून्य  
 निरा भुस भरा विभाग  
 भ्रातृमी को भ्रातृमी न मानने का घोषण हठ  
 मनो और प्राणों में सजोये विष  
 लड़ रहे हैं नारी नर  
 कठ काठ ।  
 ईर्ष्या द्वेष के बीज बोने में है उन्हें कमास ।  
 अमृतफल पाने की सधिकार  
 करते हैं मांग किन्तु  
 उसमें नहीं मानते हैं किसी अन्न को भागीदार !

टोटियों का स्वच्छ जल  
 नियामत लोकतंत्र की है  
 पीने का जिसे सभी को है एक सा अधिकार ।  
 सविधान कहता यही  
 मशा सविधान का पर तु  
 इन्हें है कब स्वीकार ?  
 मूर्ति गढ़ खाडा किया  
 देवता सविधान का जो  
 तोड़ फेंकने को उसे आप ही हैं तयार ।

इन्हें नहीं ज्ञान  
 करने क्या जा रहे हैं  
 मानव के हकों का घर तिरस्कार  
 टोड़ियों से जल उन्हें भरने न देते गंधार ।

घोषा और नहाया हुआ  
 गदला अपायन जल  
 नाली से बहकर  
 फुड में भरा है जो  
 पशुओं को अरुचिकर  
 रोगों का घर  
 इस जलती ग्रीष्म ऋतु में  
 आधा घड़ा पाने का कहां है उन्हें अधिकार ?  
 वह भी बिना दस बीस गालियों के मिलता नहीं  
 साधजनिक पनघटों पर है यह हाल ।

सविधान की श्रवणा का  
 कानून की हत्या का  
 सबलों को मिला है पट्टा किस 'याचपीठ' से ?  
 कब तक चलेगा यह अनाघार  
 पूछ रहे गांधी,  
 कबीर,  
 बुद्ध नानक  
 पनघट पर दर्शक बन खड़े खड़े,  
 राजेन्द्र बाबू से  
 मेहरू से  
 हिंदू समाज से

किन्तु उत्तर वहाँ से नहीं आ रहा  
वातावरण होता जा रहा विद्युम्प  
घट असंतोष का भरता घला जा रहा ।

पनघट पर घडा लिये  
प्यासा लडा झपूत  
रक्त-क्रांति का झपडूत  
चेतो, चेतो,  
अनागत भविष्य के आने के पूर्व  
ऐ महज्जनों ।  
उषध यलों के किरौट ।

पनघट की सविधान से होने दो  
घासित, यनी मत बाधा तुम ।  
नाश के बगारे पर  
धक्का न दो  
समाज के जजर ढाँचे की,  
ढह जायगा वह, साथ में  
तुम भी रसातल में समा जाओगे  
भूलो न इस सत्य तथ्य को कदापि ।



## मिथ्याचार

मिथ्याचार कहता पुकार,  
मुझे प्रथम मिला है  
द्वार द्वार,  
घर घर,  
गांव गांव  
ठांव ठांव,  
मेरे लिए सबसे बड़े सुरक्षा के स्थान  
वही हैं, जहां मिलता है बड़ मिथ्याचारी को ।

भाग्य की विडम्बना मेरी नहीं इसमें  
यह है शुद्ध सनातन व्यापार  
सत्ता से लेलते सभी हैं आज  
लेलते सभी ये सब,  
कौन सत्ताधारी कब  
दूध से रहा घुला ?

रत्तयुग  
द्वार  
श्रेता  
या कि कलियुग  
सत्ता का सिंह  
दबोचना रहा निरीह जीवों की शिकार ।



मिथ्याचार उतरे साप  
 शासन का भ्रम बन गया  
 न भ्रामा पक्क मे कभी,  
 तडफडाता तोडता दम  
 उसका भ्रमना गिवार ।  
 शासन और यिधान सब  
 मिथ्याचार के यिदद  
 फिर भी शुद्ध रूप मे  
 टकसाती सिक्का सा  
 चलता यह निर्विवाद ।  
 साहूकारे मे न रोक  
 बाजार मे न उसे टोक,  
 राज्य के सभी विभागों मे व्याप्त यह  
 रेलों और बसों में  
 पाया है उसने स्थान ।  
 बाकघर मे घुसा यह  
 खजाने मे पहुँचा यह  
 निर्माण और विकास मे है उसका एकधर राज ।

मारना उसको अज्ञय  
 त्यागना उसे मुहाल  
 जीवन का बहुत बडा प्रतिशत है मिथ्याचार ।  
 लोकतन्त्र मे  
 ग्राम चुनावों मे  
 पणपण यह साकार ।  
 अभिशाप्त भी वह वरदान तुल्य वरणीय  
 देखने मे आता यह  
 फिर भी कभी कदास ।

प्रात्मबल की बख-कठोर चट्टान से वह  
टकरा जाता दिग्भ्रमित  
जड़ते स्फुलिंग  
होता विस्फोट  
विद्युत् प्रकाश से भर जाता जहान,  
भर जाता मिथ्याचार का गुमान ।

युग के वे स्वर्ण क्षण  
इतिहास में अमर  
उनको मिटाना है न किसी के लिए आसान ।



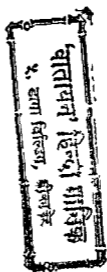
## नाला

यह नगरपालिका का नाला  
बुग-य भरा,  
यह गैस भरा  
यह कीचड़ बाढा गोड भरा  
बहता जाता  
बहता जाता  
रुक रुककर यह कहता जाता  
अधे मोलों की मनोव्यथा  
गलियारों की दूध-दूध कथा ।

अनगिनत नालियों का रागम  
अगणित नालों का आसिगम  
गदा नाला  
इतिहास पृष्ठ मानव सस्कृति का  
चित्र सवाक् सम्यता का  
नागरिकों की रुचि का प्रकाश ।  
इस नाले में बहते विचार,  
यह नाला है जीवित प्रचार,  
सब बावों का,  
ऊँचे ऊँचे आदशों का ।

हे साम्यवाद इसमें निमान  
 यह लोकतंत्र का रूप नग्न  
 यह नाला है जीवन समग्र ।

अभिनायकवादी यह नाला,  
 जातीय श्रेष्ठता का वाहक  
 इसका मथन करते पा-पा,  
 हंस हंस,  
 रस रस  
 रिस रिस,  
 वे भ्रवश विवश  
 दुबल मानव  
 ढो रहे सभ्यता का गुरुतर  
 जो शकट  
 विकट  
 सकट प्राकुल ।  
 कुलकुल  
 धुलधुल  
 धुलधुल  
 सिर से प रों तक नहा  
 धिनीने मले मे  
 नाले को करते स्वरुद्ध नित्य,  
 अन सेवा ग्रत रहे साथ,  
 कतव्य लग्न, वे अस्त्रियशेष !



कितने भ्रूणों को बहा साप  
 लाया करता यह  
 सार्प्य प्रात ।  
 पापों का लोहूँ धावरण बन  
 विकृतिघों पर  
 घनघोर घटाघों का पर्दा ।  
 यह नगरपालिका का नासा  
 युग युग से नगरों की गाथा का  
 एक मात्र प्रच्छन्न स्रोत  
 भ्राणा भ्राकाशा, शोक-बोल  
 इस नाते के पय के साथी ।  
 यह है समाज का शुद्ध स्वच्छ दर्पण  
 बिधित इसमें नागर-संस्कृति ।

युग युग की नगर-सम्पता का  
 जीवत रूप  
 गदा नासा  
 सङ्गता नासा  
 कीचड से बधा, मुदा नासा !

यह श्वात रुद्ध,  
 यह ऊपर नीचे से अशुद्ध  
 अस्वच्छ हृदय भी यह  
 शुचिता का परम पवित्र द्वार  
 यह नगर-पादर्व में  
 पुण्य तीर्थ का परम रूप  
 निर्बाध

प्रगति-सोपानों पर गतिशील  
किंतु बुगति के बंधु में विलीन  
होने को प्राप्त है नितान्त  
गहरा नासा, यह बात बात !



## नफा मुकसान

हाजीजी को है पार नहीं  
ये क्या बँलों के भाई थे  
कम साप साप ये धरते थे  
दुख बढ़ बटाते थे मिलकर ।  
है भूल गया उनको रिश्ता  
बहु गाय द्वार पर अग्रज छोड़ी  
साकती शूय मे  
घर मे उसको ठीर नहीं  
जो प्यार बहिन का पाती थी  
जो दुहिता सी मन भाती थी  
सोती थी आँगन मे  
दूटे माचे के पास  
रभाती,  
गाती सी कुछ रोह गीत ।

रोते जगते, खाते पीते वे  
हाथ फेरते चलते थे  
उसके कोमल चिकने शरीर पर  
पुष्पकार भरा था प्यार विपुल  
तब, जब वे हाजी बने नहीं थे,  
गाड़ीवान मात्र थे ।  
प्रात से साय तक

घूप हूँ घा पानी मे  
बलों की जोड़ी के साथ साथ  
होया करते थे वे अनाज  
स्टेशन से गोदामों की ।

बैलों का उनको था गुमान,  
गायों का था अभिमान बड़ा  
कुछ ऐसा था  
अटूट गहरा सबंध  
कि उनकी भुला नहीं पाते थे वे  
उस समय  
जबकि जीवन था सीधा और सरल  
सरता अनाज था,  
सस्ता था सब कारबार ।  
बैलों गायों का मील  
न कुछ था  
पर उनका जीवन मे था स्थान बड़ा  
सीहाई-स्नेह-बधन फडोर,  
वे उसमे थे यों कसे हुए ।

फिर विश्व क्षितिज पर  
उठा अज्ञानक एक बड़ा तूफान  
युद्ध आह्वान,  
वि जितसे फूट उठा  
जीवन के अतस का विराट  
घात पडा चिकान्त ज्वालाभुञ्जी



बदला समाज  
 सब बदल गये उसके मूल्य ।  
 गाडीयान,  
 गाडीयान धीन रहा गाडीयान ?  
 जीवन के मोड़ पर  
 छोड़ भागा गाडी-बैल  
 बेच पांच पांच सौ को एक-एक  
 रातोंरात गाडीयान बन गया ठेकेदार  
 गाडीयान ठेकेदार,  
 गाडीयान ठेकेदार !  
 हज़ जसदार ठेकेदार !  
 खुला मिला काला बजार,  
 खूब चला ध्यापार  
 उन्नति के श्रृंग पर  
 जा चढ़ा ठेकेदार  
 तैर चला चाँदी की सरिता के धार-पार

नया नया साहूकार,  
 धीन धीर कलाम पर व्यापी थड़ा अपार  
 भक्ता मदीना, हज़ नमाज से  
 हो गया प्रगाढ़ प्यार !

काल मरुसागर का पार कर विस्तार  
 क्षीण धीरे धु धलकी सी  
 स्मृति में कभी कभी  
 उठता ज्वार,  
 कभी कभी हाजी की धारों में

धूम जाता चक्र,  
गाड़ी बेल, गाड़ी बेल,  
घास फूस बच्चा घर  
घ्रायन मे, नीम तले,  
बरती जुगाली लड़ी गाय कहीं घ्राँँ मू व ।

स्वप्न उड जावे  
पल मात्र मे पर-तु बं  
दोलत का नशा होता जाता नित्य गहरा ।

छप्पर के स्थान पर हबेली का निर्माण  
होता गया, त्यों त्यों बेचारी दीन  
दुबल, गाय यों खिसकती गई  
कोने से कोने मे,  
कोने से कोने मे,  
घात मे होगया कोना भी उते मुहाल ।  
बंभव परसता गया  
नशा गहरा चढ़ता गया  
गाम गोशाल कि-तु होते गये सकरे ।

हाजी ने उठाये मकान पर मकान  
मूक पशुओं के कि-तु छिनते गये स्थान  
दीन घम के स्वरूप  
दाड़ी और अचकन मे  
हाजी का खिल उठा रूप ।  
मस्तब भी, तकिया भी,  
कमलाव

गोदत बचाय,  
शानो शयाय,  
ये हिसाय  
हाजी जी हो गये दूसरे नयाय

गाय से गया रिदता दूट  
घा गई यह सडक पर छूट ।  
जहो जहव से हुभा बिनारा  
खडी है बेचारी बेतहारा,  
बेख रही बेकस निराग  
कहाँ गया स्नेह पाग ?

झालों का चडमा,  
हाजी जी का  
लिसककर भागया है नाक के छग्र भाग पर ।  
गाय के अस्वियपजर देख  
सगा रहे हैं हिसाय  
कया हुभा, कितना हुभा,  
नफा या नुबसान ?

नफा या नुबसान,  
गू ज उठते घरा घाम,  
गाय खडो ताकती है,  
कापते हैं टाड चाम !

## लोकतन्त्र

जन मन स्वतंत्र,  
या जन स्वतंत्र,  
भारत में जागा लोकतंत्र ।

नारी स्वतंत्र  
घर की विभीषिका से बाहर  
चल पड़ी  
उफनती सरिता सी,  
होड़ती कगारे  
मर्यादा का तिरस्कार करती ।

स्वच्छन्द कम्युनों का जीवन  
अभिनव आकर्षण बन  
उसकी पतवारहीन नौका सा  
खोँच धार की ओर ले चला  
धूम कर नहीं देखने की शक्ति उसे,  
बुजुआ अतीत का  
ढोपेगी वह नहीं भार ।  
तन मन का राष्ट्रीयकरण पर  
पीषणहीन समाज  
घनाने का प्रण लेकर  
यह गवित, यह है प्रसन्न ।

नारी स्वतंत्र

✓ अपनी इच्छाओं की राती

उसको अपने से प्यार

घर, गृहस्थ, पति सतानों का भार न उस पर,

उन पर तो अधिशार राष्ट्र का,

परिधि मोह की उसे बांधने में श्रय प्रक्षम,

ध्यापक उसका प्रेम

समाया जिसमें जन जा ।

नव मूर्त्यों

नव संधियों की नयस्फूर्ति से

वह परिचालित,

नव समाज की प्रविष्टाभि वह

स्वप्नों के अपने भारत में

करने निकली बरण

ध्ययस्था नूतन को वह ।

युग युग जीए पुरातन पय

उत्सग त्याग से शीए

कुटुम्बों परिवारों में बधा

छोड़ लूए तुल्य

स्वरिणी वह निकली

आखों में लेकर एक लपट

बाणी में विप के विषम बाए ।

नारी स्वतंत्र ।

जन मन स्वतंत्र,  
जन गण स्वतंत्र,  
भारत मे जागा लोकतंत्र !

घर घर मे,  
नगर नगर मे,  
ग्राम ग्राम मे,  
डगर डगर मे,  
युवक प्रौढ़ जन,  
बाल धृद्ध मन,  
सब मे स्वतंत्रता का झण्ड  
उभत्त वेग से प्रवहमान ।  
जीवन बचन ध्यापार शिथिल  
इलय सामाजिक उपचार  
असयत मुक्त गगन  
उमुक्त गान ।

मत्तानुगतिकता छिन  
भि न मम  
गय जीवन  
उत्थान, गयो नति  
नये गये पथ  
नये क्षितिज पर नये उपग्रह  
अगची ही अनसुनी  
अभीप्सित कक्षाओं में भ्रमणगील,  
निर्बाध  
निरकुल,  
निरपलव !

स्वच्छद घरा,  
 स्वच्छद घाम,  
 स्वच्छद व्योम,  
 स्वच्छद याम,  
 स्वच्छद उर्मियों का प्रवाह  
 ले चला बहा प्राचीन, पूज्य  
 श्रद्धास्पद  
 मन के स्निग्ध सत्व ।

स्वातंत्र्य सून के नवालोक में  
 नये मूल्य  
 नव दृष्टि  
 सृष्टि नव  
 रेडियम धर्मिता ध्यास  
 वातानुकूलित जीवन के शोर छोर !

सतुलन शून्य अधिवास  
 तदपि मानव उर में उल्लास  
 उच्छलित  
 आशाशयित विश्वास  
 कोटि कोटि चरणों में  
 घपला की गति घचल  
 जुटा रहो जीवट  
 झटूट  
 समयश्रीं से बोभिल  
 उत्पादन विपुल  
 रिक्त भय  
 स्वल्प गिराघों  
 प्रभुर सभावनाघों से उज्ज्वल लोभतत्र ।

जन मन स्वतंत्र

जन गण स्वतंत्र

भारत मे जाया लोकतंत्र ।





## आश्वासन !

चिर नवीन आश्वासन,  
प्रगति पथ का सबल,  
बल,  
साहस,  
सत्प्रेरण,  
युग युग  
प्राणों का पूरक  
आश्वासन !

आदिम युग से हाथ धाम  
करुणातों के बीहड़  
दुगम पथ,  
सबटापन  
उद्वेग गिरितट,  
सागर सघट,  
भूबालों-ज्वालामुखियों के  
कपित  
जलते भूससे पग  
करा चुके सतरण  
सहस्र उसके बलिष्ठ कर।

प्रति बार नये  
प्रतिदिन नूतन आश्वासन  
जीवन का भरते रहे रिक्त घट  
तरल  
हृलाहल से प्रतिपल  
छलते मानव को अहरह ।

घोड़ घम का छद्म वेश  
उपदेश गया  
परिवेश नया  
मंदिर मठ मूर्ति पुजारी मिस  
आश्वासन का सुरभित पराग  
भरता  
भरता  
युग युग  
जन मन ।  
भूखा मानव  
जडता  
मरता  
गिरता  
गडता अनथक आकुल ।

रक्ताक्त हुआ

शत सहस्र बार ।

खाडे कृपाण की तीक्ष्ण धार,

आशवासन ध्वज उत्तोलन कर

जेताओं विजितों के मन मे

भर चुकी अनेकों प्रखर ज्वार ।

निर्माण ध्वस सोपानों पर

घड़

गिर,

इसके बल

हुए सफल

आशाचित्त नतित युगारम्भ,

मूर्छालस

मु चित

गत युगात् !

आशवासन के जीवन्त चरण

शीर्षस्थ सतत

सतयुग

प्रेता

द्वारपर

भूपर

उरेहते गये प्रपति के बक धाक ।

पुनः आज आश्वासन  
 जजर मायता हित  
 सदय हृदय  
 परसेवी साथो खुशबोव  
 निर्मात्य रूप लेकर  
 समुपस्थित  
 करते क्रमलिन मे घोषित  
 'आगामी '८० वें  
 प्रति व्यक्ति एक अ डा प्रतिदिन  
 देने मे होंगे हम समय ।'

पट दशाब्दि उपरान्त  
 महान जनवाद की यह विजयोपलब्धि !  
 आश्वासन वरदान प्राप्त कर  
 विवश  
 ध्वषित  
 मषित  
 विदलित  
 विचलित जन मन अनुक्षण !

रक्त प्राति का सुफल,  
 खोलला  
 लख रक् आश्वासन !



## भावात्मक एकता

अ तविरोध हारण  
रोमरोम  
नस नस  
एकीकरण मन का  
क्षीयमाण,  
भावात्मक एकता  
हु स्वप्न मात्र ।

सोम प्रात वात मित्र  
छिन्न सिरा  
छिन्न तनु  
प्राण का प्रवाह छि न,  
बह चले विलोम गति  
उरत सभी,  
ग्रहरह होड़ मघी  
आत्मघाती विघटन उपास्य कन जन का ।

विफल प्रयास एक जुटता के  
 जीवन दशा दुग्ध मे  
 पड गई सटास स्वार्थपरता की  
 धिपम धिप ध्याप्त  
 मुधा सि धु ।  
 अपनी अपनी डफली  
 अपना अपना राग  
 सब गाते औ बजाते  
 नहीं सुनना चाहता  
 कोई किसी की बात ।

द्विष्ट कजग के नेता,  
 सिबल पय के प्रयोता,  
 स्त्रीगी,  
 समाजी,  
 सभाई  
 सब एोव रहे साई  
 सोपतश्री चेतना शूय  
 जन मानस ?  
 नहीं, नहीं,  
 नेतृ दग ।  
 सत्ता लोलुप  
 विदेशी शिक्षा,  
 सस्कृति, भाषा,  
 विधि विधान के प्रति निष्ठाघान ।  
 भूल निज पय, निज रूप घान ।

भावात्मक एकता की प्राप्ति  
राष्ट्रभाषा  
हिंदी का पद पद प्रतिष्ठान !

उद्योतिकिरण प्राकाशा  
सध सेवा दृष्टि  
ऊपर से नहीं, नीचे से  
जन जन से  
मन मन से  
उच्छलित,  
उमंगित  
भरेगी उस रिक्तता को,  
उस व्यवधान को  
प्रस्तुत कर समुचित समाधान ।

भाषा के अंतर से  
जीवन की गिरिकदरा से  
बहुकर साया  
बनेगा एवता का सोमेट,  
जुड़ जायेगी दि नता  
भिन्नता  
खिन्नता  
अभिन्नता के वातावरण में  
भूज उठेगा, 'जन गण मन अधिनायक जय हे !'

[ प्रतिबदन के स्वर

कण कण

अणु अणु

इलेक्ट्रोन

पुट्रोन

प्रोटोन

घनाणु

श्रृण्णाणु

अणुकाणु

मिलन-संगीत की स्वर लहरी मे

प्रयित हो जायेंगे

होगा भावात्मक एकता का अमाप प्रसार ।

होगी नहीं आयात

मिलेगी न भेंट

दशन के दृष्टिकोण मे

न उसका कहीं विनियोग,

अपने प्राणों के प्राण मे

क्षीरसागर मे विष्णु स्वरूप

उसका अचिंत्य रूप

रमा है

बह जलती शमा है,

उसमें निहित है अनंत शक्ति

उसे खोना नहीं, पाना है,

पाकर अवनाना है

यही हो हमारा प्रयास ।



कैलाग के शिखर से  
क्या कुमारी तक,  
द्वारका से कामाक्षा तक  
वाणी वाडमय की एकरूपता का व्याख्यान  
लिये है भारत का समुत्थान  
यही जीवन, यही है गान  
प्राणों में भासमान ।  
यही चिर अभिनव अजल तान ।



ये उल्लू, यह चादनी रात !

मधुयामिनी,  
चादनी मे खीये घरती ग्रासमान !  
रेगम का झालम,  
प्यार की दास्तात ।

कहाँ से उड आये इतने उल्लू ?  
किन बियाबानों को उजाड आये  
छिपे कहा थे ये हैवान ?

उनीस सौ सतालीस से पहले  
किन सुनसान सडहरों मे,  
किन घ घेरी बुजियों मे,  
घद थे ये ?  
स्वच्छद ग्राड !

चादनी रातों को अरमी करते  
डाके भारी भारी डने  
घातावरण मे हडकप  
अतरिक्ष मे उफान !

जन स्वातंत्र्य की रजत रश्मियों में,  
 तिमिर के तिमिगिलों का दौर  
 कुछ अजीब  
 कुछ परेशानियों भरा  
 उभरा  
 पेशानियों के नीचे  
 जल स्थल के ऊपर ।

केमरे के लेंसों में  
 इनके विरूप चेहरे  
 भद्दी अदाओं से  
 होते प्रतिभासित ।  
 इनकी अनुपस्थिति को  
 सह सकता नहीं  
 विकास का अभियान ।

ध्याकुल मधु रजनी का  
 विधुर विद्रोही मन  
 इनके हेतु ।  
 राहु केतु ये  
 सि धु मयन से प्राप्त अमृत घट  
 मु ह से लगाये  
 पिये जा रहे सुषा, सुरा की तलछट ।  
 ताजते लहे  
 अमर अवन, द्यपित !

निशाचरों के कोलाहल से कपित,  
पकिल यक्ष  
धकधक,  
अधुसिक्त शरीरिणी  
धिरक्त अपांग,  
बलात्कार की पीडा को  
सह नहीं पा रहे  
मथुराका के सुकीमल अंग !

ये उल्लू, यह रात !  
बह धलो ऋभावात,  
बूर, अति बूर है अभी प्रभात !



## नई कविता

तोड़ बही छ-ब ब-ब  
कविता धारा भ्रम-द

मुक्त गान

मुक्त तान

मुक्त जन मानस,

उरेहना, सहेजना हे

ज-मनात भाव चित्र ।

शाश्वत सरस सित्त

वैदिक भ्रवेदिक,

नैतिक अनैतिक,

कु ठित अकु ठित,

नग्न अयगु ठित

विश्व मन, विश्व प्राण

ध्यात धिरपोषित

नबोदित

बीणापाणि कल कठ नि मत

नई विषा

सहस्रधा विभक्त

लोम्र चलो नये पल ।

[ प्रतिषेदन के स्वर

नूतन पुरातन के बीच  
 खड़ा देख रहा दोनों ओर,  
 दोनों ओर,  
 नवस्थापित  
 नये प्रतिमानों के लेख लिये  
 नया मील पर्यर ।

उपमा उपमेय नये  
 अनगढ़  
 अप्रमेय  
 घाम पक्ष  
 लक्ष लक्ष  
 सकुल प्रतीकों के धरण्य में,  
 प्यस्त अल इतालिया के  
 अभाग्ये यात्रियों के शवों सा  
 यहां बहा, प्राण श्री प्रमाणहीन  
 छितरा पडा, पर-तु  
 जगा रहा बेवना,  
 व्यथा से छेद रहा मन,  
 दग्ध कर रहा हिमांशु  
 वक्षिण पक्ष  
 बन रहा विस्पुवियस, एटना ।

नई कविता के जादूक मडिन  
 नव्य भव्य चरण  
 उ मुक्त चरण की बिद्या मे  
 लिये जा रहे हैं उसे क्षण क्षण ।

उठो कवि, चलो साथ,  
जाने दो न उसे अनाथ  
परम्पराओं के घेरे से बाहर ।  
प्रणम्य पय झल्लता  
चरणों से तुम्हारे सौम्य,  
होने को कृतार्थ पडा— वहाँ,  
कहाँ ?  
यहाँ, इधर, इधर यहाँ !



।

## एक किरण

एक चरण, एक शरण

एक भाव, एक भरण

एकता प्रसार मे

अनेकता समाहिता,

न रूप राग

आकृति न

प्रकृति प्रमेय

नाम धाम ध्येय ध्वनि न ।

नीरव निशब्द

निराकार

वासनाविहीन

महामीन महासूय

दिग्विहीन द्वन्द्वमुक्त

अनिषद्य अपायिय

अव्यक्त एक सिद्धुरूप,

सिद्धुरूप,

एक चरण, एक शरण,

एक सूय, एक किरण !

काव्य एक, भाव्य एक,

अव्य एक, आव्य एक !

एकोऽहम् अनेकोऽहम्

अहं भयम् न त्वम् न त्वम् ।



## दो बहने ✓

वसत हेमन्त मे,  
शिशिर मे,  
प्रोष्ण मे,  
वर्षा दिग त मे  
घड़ी की दो सुइयां  
साथ साथ  
पास पास  
फुटपाथ के सहारे  
राजमाग के किनारे  
हसतीं किलकतीं  
पिरकतीं  
विषकतीं  
विदकतीं  
कहाँ जातीं ?  
कित्ते खोजतीं ?  
रहस्य नहीं खोलतीं,  
न बोलतीं  
न तोलतीं हृदय क भाव  
परिचित अपरिचित से,  
मग्न मग्न जातीं बली  
अपने में समायी  
तरते सपनों भरी झालें लिये ।

शत सहस्र वर्ष उपरांत  
 सौम्यता की प्रतिमाए  
 छोटी बड़ी मुद्रयां  
 समय का झचल गहे  
 झचल चरणों से  
 झपल, झपल गति  
 दशकों की हुस्तियों पर  
 झघात करतीं  
 निरम  
 उसी भाति घाती जाती है ।

न दकतीं,  
 न देखतीं,  
 अहृदय प्यार के जादू बंधी  
 निरंतर  
 अरुद्ध श्वास ।

उनके पदचिह्नों में  
 सौ वष के *पुस्तक*  
 में हवी मांडनों से  
 रचे काव्य  
 स्वच्छंद छंद *रत्न*  
 पुनपुना उठता पुनकित समोर,  
 हस्तिकेत की शुभ्र चीला पर,  
 युगयुगों के गलियारों में  
 सुपुरों की भकृति मिल  
 बखेरती सगीत की तरल मधुर लहरे

तुषारों और तारों भरी रातें  
 पोंछती शबनम से,  
 रश्मियों से,  
 उनके पदपद्मों के झलकक को  
 छाठों पहर ।

घडी की वे सुइयाँ,  
 समय की पहचानतीं,  
 हृदय को विलोतीं और ध्यानतीं,  
 मन्त्रों के उद्धत ललाट  
 और ग्राह्य व्यक्तिव को  
 पंरों तले री दती चलतीं  
 भ्रमणों मे मादक लालिमा लिये,  
 भोली अबोली  
 ही थी रजिता !

ज्येष्ठा कनिष्ठा वो बहनें,  
 रश्मि आगरी  
 गुणगरी  
 अट्टल घपल छद्मवेगिनी,  
 सुकेशिनी, नतानता,  
 डू डती चलतीं किसे ?  
 फुटपाय के सहारे,  
 राजपथ की मुहारतीं  
 पक्षल धरोनियाँ

छानतीं रेणुकरा,  
रात से प्रभात तक  
ग्रन्थान्त भाष से,  
सज्जा रूप सज्जा भूल !

कोन यह भाग्यवान,  
कोन यह रूपवान,  
कोन घट युवा तपस्वी  
मनस्वी, रजन रत्न कवि  
मुग्ध हृद्य  
प्यार ज्वाल मे  
जिसके, जताती भी  
चलती जा रहीं वे युग युग  
ममन्द अरुद्ध अविधा त ?



## अतीत स्मृतिया

याद किसे आती नहीं  
सध्या के फुहासे मे  
किशोर अतीत की  
कल्पना कुसुम वत्  
इन्द्रधनुषी स्वप्निल प्रच्छाय रूप  
वाम दक्षिण पादवर्तिनी  
शत शत स्नेह मूर्तियां ।

हास विलास उल्लास पूण  
उन विगत वीचियो मे  
यमुना पुलिन पर  
निचुल निष्ठु जो मे  
अश्रित हैं कितने रास सास  
हास आस !

समय की सरिता मे  
बह गये कितने वर्ष ।  
युग युगात्  
देश प्रा त  
आत मन घूम रहा  
चक्रित चक्रित  
घूम घूम निरर्थ,  
मधुवन घृदावन, गोकुल, नरप्राम !

भूली कथाएँ धन गये  
 मधु रजनी के  
 घननुभूत सुख भ्रष्टएय,  
 जोए इतिहास हो बिलखरे  
 मानभग क मनुहार भरे  
 प्रणय निवेदन यत्र तत्र !

नूतन पुरातन मे  
 रहा नहीं व्ययधान  
 समय की दूरी का न भान  
 क्षणों में समाये  
 युग कल्प  
 स्मृति का तरल सरल बोधिमा  
 पल पल धो रहीं  
 धुँधले शिलातट  
 सुदूर ध्वतीत जहाँ भासमान  
 नीला भासमान  
 राहज साक्ष्य बना  
 तना सिरों पर यितान !

नक्षत्र लोक मे  
 लो गई नीहारिकाएँ  
 धनु ऋ प्रकाशपिंड  
 छितरे असीम विस्तार मे  
 न गिती, न उनका ज्ञान  
 कितने कहा ये ?  
 कहा गये महान ?  
 विलुप्त स्मृतियों मे  
 कहा रहा उनका स्थान ?

## वियोगिनी

मीन के सनाटे में  
रटा हुआ प्रेम का इतिहास  
सो गया  
घर के अंधेरे कक्ष में  
मिलन सपना  
चली गई उदास ।

जितना सोचा था  
कहने सुनने में  
चीत जायगी सारी रात,  
गिरा पगु,  
कठ रुद्ध हुआ  
भूल गई अनकही बात ।

वे प्रायः दूर चल गये,  
ले गये अपना साथ  
हाथों की महदी,  
परों का गहावर,  
मन के महात्तम  
अपनों की स्मिति अनचात ।

छोड़ गए युग युग को  
केनों की उलझन,  
प्राणों की घुटन,  
हृदय की घड़कन,  
भावों की छरकन,  
प्राणों की बरसात !





## बच्चन कवि

'बच्चन' हिंदी के गायक कवि  
उनायक कवि  
मन्दिर में 'मधुशाला' लाये  
'मधुबाला' लाये  
साकी सागर प्याला लाये  
हाला लाये  
देवार्चन भूला,  
अध्व्य डूला,  
पथ में पचामृत रहा पडा,  
जन मानस उमडा  
बेहाल विसुध  
'बच्चन' की कविता  
का कुछ ऐसा नशा चडा ।

साहित्य पुजारी हुये राजग,  
पडे चित्लाये 'हाय हाय'  
विप्रों के मुझ से कड़ा गाय,  
'बच्चन' की कविता सुरा किन्तु  
सब रहे डालते  
बाल घुड़  
सूख छिप

पीपी मतवाले घने अमित  
 धनुगासन गास्त्रों का टूटा  
 यह गया धम  
 उह गया कम  
 समय टूटा  
 सगीत मुखर मधुवाला मे ।

मधुघट मधुवाला की हलघल  
 लाई जीवन मे नये मोड,  
 भाषा मे नूतन गति,  
 छंदों में श्रद्धा परिणति,  
 गिरकन मन में,  
 सिहरन तन में,  
 घातगा क्यथा से तप्त प्राण ।  
 'वचन' की कविता मे  
 स्थापित किये  
 मूल्य नय, नये मान ।

वचन' नवयुग के कवि,  
 नय पथ की छवि,  
 नवयौवन के उ भक्त चरण,  
 लाक्षण्य रूप रस के वाहक  
 लयाम अपर  
 कर जिहें चरण  
 हो गई धय विभ्रम्य गिरा ।



## प्रतिदान

पाया नर ने अमित दान  
तुम से प्रभुवर ।  
शुभ यरदान  
तुम्हारे सकल्पित अघरों से ।  
सागर तरिता गिरि कानन  
सह राज शिखर, हिम शिलाखड,  
वीरघ-निकुल,  
घन तडित् ज्वार,  
कुमुमित दिगत,  
मलयज ब्यार,  
उच्छलित उत्स,  
भरभर निभर,  
व्यापक अछोर छाया निसग  
रवि गशि नक्षत्रों-जडा नील नभ  
उषा  
तमिया,  
धूमिल सध्या,  
गस्य न्यामना घरा,  
सवस्ता वामघेनु,  
पक्षीकुल कतरय विपुल  
जगत वृण सकुल,  
रोम रोम उस महादान से धन

पुण्य मन

प्राण पुलक परिपूर्ण

अज्ञानत हृतहृत्प हृदय

तव चरण प्राग्त में पुन

समर्पित करता वह सब

जो तुमसे पाया था

ज्यों का त्यों—

भनवरता,

भनपुष्पा,

भननुलित,

तुम उसकी सो सहेज !

जो कुछ था तुम्हारा

उसीका लेने में तुम्हें

हो क्यों किसी विधि सकोच ?



## उर्वशी और दिनकर

हो तुम कितनी प्यार भरी,  
कितनी  
मनुहार भरी हो तुम,  
उर धझ कर लेती हो  
पल में, उर्वशी  
द्वार की शोट खड़ी ।

सध्या के सीमन्त विद्युर पर  
विड्ड,  
पार्श्व में पंजनि भीरव  
घोठों पर हिम हास,  
सात में सुरभि,  
स्वच्छ विन्दास भरा उर ।

तुम हो पूर्ण सकाम,  
नाम पर नहीं तुम्हारा  
लिखा, सिन्धी अधरों पर ।  
सुमुलि,  
प्रसरति,  
सिमटी जाया क्वचित्,  
प्राण के धालियन में ।

विपुल वक्ष से,  
पुष्पल नितम्बिनि,  
हरती हो उत्तम विषम उषर ।

पुरुष्या नृप तुम्हें खोजता  
छायावन में,  
तुम करती छल,  
झोड़ चीर तारों का झिलमिल  
मिल 'दिनकर' से ।



## स्वप्न-साक्ष्य

मैं किशोर घनवृक्ष  
अतुल तम रूप पवित्र मुकुल मृदु  
पादप वेष्टित,  
प्रणय-सुख्य मालिनी लताओं के  
छायांचल मे मध्याह्न  
शांत शीतल सध्या सा  
हिम जल से धुलते  
पुलिनों का पार्श्व  
हरितवसना वसु-घरा का नि स्वन स्वन  
मुखर हो उठा या  
तेरे मधुगीतों में छबिचालिनि ।

चकित

विग्भ्रमित

भूल ठगा सा

भय्य रूपनिधि मे सुमने !

मृग मन मेरा ।

दूरस्थ हिम शिखर,

य-य पवन,

हस्तों की पातों,

कोकिल स्वर,

गिम्हर वा म्हरम्हर

प्रतुल सहारियों का कल कपन  
 - साथी हैं धीरघ सुमनवृत्त  
 यह झजर झमर दारण  
 स्मृति के प्रांगण में  
 सब से पृथक  
 सुहावन भावन  
 स्वर्ण कलंग सा  
 ऊच्य घर में स्थापित ।

जीवन का सबा पप  
 कुहरा प्रकाश,  
 सुख बुख,  
 हर्षातप,  
 बोहड सुरभ्य  
 जनपद खंडहर  
 किस किस में होकर चला नहीं,  
 किस राग रोय मे गला नहीं ?

दिन पदा मास सधरसर,  
 शत शत  
 कितने कैसे हो गये द्यगत !  
 रगीन शिल्प  
 धूमिल छाया  
 माया का मोहावरण भजु,  
 फट गया बाबलों सा पल में ।



या उठा घटा सा घेर गगन  
 विद्युत्, घन गर्जन  
 कर्मिल उबर  
 उत्तप्त दृप्त  
 हो गया शांत  
 हो गया स्तब्ध  
 छा गई धुंध  
 अथरुद्ध दृष्टि  
 पुण्यायोजन  
 निसगत शिखर अरु  
 प्रस्तुत करता स्यर्णाभा  
 मधुमय विगत मिलन की

हासविलास युक्त उस दिन की  
 टोल रह गई शेष,  
 देश सब गया बदल  
 सब गया बदल  
 जीवन  
 मौवन  
 स्वर गीत  
 भीत मन  
 प्रीत यजन  
 घन गर्जन  
 कोप विसजन  
 प्राकृत अबर, अणुय, अरण्यानि ।

[ प्रतिवेदन के स्वर

उन भोगी बलकों में  
 सोया है कोई स्मृति गिनु  
 स्पष्टित अक्षका बक्ष  
 शिराए तनतीं  
 पुनतीं प्यारों के कीयेय बसन ।  
 धोली, धोली,  
 कह बो कुछ तो  
 सातों का नित ससार सुमुल्लि,  
 यह बखलेल से अकित गाया  
 कोमल फुसुम अभुक्त प्रणय की ।



## चेतावनी

सिद्धा त वो राष्ट्रों का  
न माना परंतु  
भारत विभाजन कर लिया स्वीकार !  
देश के षग भग के साथ  
पन्द्रह अगस्त सन् सतासिस को  
शून्य घड़ी पर  
सत्ता हस्तांतरण  
स्वाधीनता का अवतरण  
एक साथ हुआ परंतु  
सतलज, व्यास और भेलम में  
गंगा, जमुना और सगम में  
अहमपुत्र, सिंधु-ऊर्बंग में  
कितना रक्त मज्जा बहा,  
आई लज्जा को भी लज्जा ब्रहा !

यह था हमारी स्वाधीनता का समारंभ,  
शेष रहा फिर भी बम्भ  
वो राष्ट्रों के अस्वीकरण का !

[ प्रतिवेदन के स्वर

समय रूप,  
 सत्य रूप,  
 एक देश में से हुये उद्भूत  
 राष्ट्र दो,  
 ध्वज दो,  
 तन दो,  
 मन दो,  
 विचार दो,  
 मार्ग दो  
 विपरीत धर्मों' विरोधी,  
 चिरशत्रुता निम्न  
 कैसी तो विह्वलना !

कसी गति,  
 कैसी मति,  
 शक्ति का अर्थव्यय,  
 जीवन का क्षय,  
 अलक्षता का विलय,  
 शांति के नाम पर  
 अशांति का बीज धरन !  
 वियम विय युक्त रोप  
 अमृतफल की आश !

अब भी है समय,  
 न हुआ है अभी अस्त रवि  
 भारत के भाग्य का ।  
 कश्मीर की बोला पर  
 न छिड़ने दो युद्ध राग ।

हिमालय का सिंह द्वार,  
सीमांत के उस पार,  
घाग की लोहित पीत लपटों से  
वेष्टित रहा पुकार,  
चेतो, चेतो, प्रहरी स्वतंत्रता के,  
मानवाधिकारों की रक्षा के कणधार ।



## चीन की मृत्यु पर

वियतनाम है नहीं,  
कोरिया नहीं,  
न तिब्बत,  
तामो भी यह नहीं,  
नहीं यह ताइपेह है ।  
यह भारत है चीन ।  
कस के हेतु चक्रपर वृष्ण ।

श्री बु

मोटे मीठे भूल  
तित्त बट्ट का से अनुभव ।  
सोहित, नेफा, सहाल स्टे  
कम्र ये तीन  
जहाँ चीन का गव  
गिट्टी पाने की ब्यग्र ।

वधवाहिनी भारत की  
है वधनचक्र, वेने को उमकी युद्ध  
कि जो  
घनिमत्रित और अर्थाद्यित  
दुष्ट चररा  
धुस माया सीमा में बताव ।

है जिसको शस्त्रों का गुमान,  
 है जिसको सेना का घमड़  
 है जिसको पशुचल पर आस्था ✓  
 वह शलभ मात्र है दीपक का  
 अपने ही पत्तों का विनाश  
 करने को घिर घिर रहा घूम ।

यह पूरव का आकाश लाल,  
 सदेश मत्स्य का लिये खड़ा  
 उस महाराष्ट्र का  
 जिसका यश गौरव विशाल  
 छाया था भू पर  
 इसी हेतु  
 था क्योंकि शांतिकामी वह,  
 बुद्धानुगामी वह,  
 आत्म स तुष्ट  
 विद्वत् सस्कृति में था जिसका मूषय स्थान  
 विस्तारवाद से न था उसे काम ।

कम्युनिस्ट बोधा में  
 भूल दृष्ट  
 चल पडा अनिष्ट पथ,  
 स्वाध,  
 स्वार्थ ही रह गया उसे दृष्ट  
 दूर दृष्टि होगई विनष्ट  
 हुआ अ था वह  
 सृष्टि सधधमा के हेतु बना सकट ।

उत्तम मरण पर्व  
मना रहा है विश्व राज,  
उभय शक्ति गुटों में  
उसके निधन पर  
प्रश्रुपान करने को  
प्राप्त नहीं कोई शोक,  
शोक, शोक, महाशोक !





## सेना की हुकार

कैनास यास शिवशकर का  
हम उस पर श्रद्धा चढायेंगे ।  
हम सेनानी हैं भारत के  
गिरि शृंगों से टकरायेंगे ।  
हे कौन शक्ति भूमदल पर  
जो पथ में बाधा लडी करे ।  
उस पार हिमालय के बढकर  
हम राष्ट्रध्वज फहरायेंगे ।

उस चीन चीन का हमें न भय  
जब रणभेरी बज उठी यहाँ ।  
पषड तूफानों में तिघडक  
हम हिम शिखरों पर घायेंगे ।  
हुट जाओ मेघ हिमालय के,  
रस्ता दो ग्रह पुत्र गगा !  
तिब्बत की निर्मम दृषया का  
बदला अब आज चुकायेंगे ।  
होगई समाधि भग शिव की  
माओ बाओ के कृत्यों से ।  
अग्निस्फूर्तलग से चञ्ची के  
हम उनके उर दहनायेंगे ।



## हिन्द की सेना

'विजय सत्य की जय भारत की'—

घातरीश हिम उठा घोष से ।  
घातनाइयों के जुस्मों पर  
जनमानस फिर उठा रोष से ।  
घर घर कड़ बूढ़ घसे युवक  
घस एक लक्ष्य लेकर भागे ।  
इन मानवता के घोर नाशुओं  
को न मिले रास्ता भागे ।  
गोले गोली बंदूकों से  
भय हमें न, यत्न हमारे उर ।  
हम घागादी के शीयाने फिर  
हमें भेड़ियों से क्या डर ?  
वप धूरण करने का रिपु का  
हृद घत हमने ठान लिया ।  
हिम शिखरों के पार हिन्द की  
सेना ने अभियान किया ।  
मुक्तिवाहिनी भारत की चल  
पड़ी खोलने को बधन ।  
प्रस्त प्रस्त जाजन विमुक्त हो  
तभी हमारा सफल यजन ।



## भारत एक परिचय

लखे शिंदे साघ्राज्य न हमने  
साक्षी है इतिहास जगत का ।  
घांटी मुक्ति सदा जन जन की  
वितरित किया प्रताप मुगत का ।

सह प्रतिशय सक्षय था सपना  
जियो द्यौर जीने दो जग की ।  
स्वेच्छा से विकसित हो जीवन  
खुला मिले नम का पप लग को ।

नर क्या कीट पतंगों तक की  
इच्छाओं को मान दिया है ।  
कभी राष्ट्र यत्न का न भूलकर  
हमने कुछ अभिमान किया है ।

सत्य अहिंसा के धामे का  
दृढतम रक्षामथन सपना ।  
जीवन का ध्यावार बन गया  
दोष जगत की था जो सपना ।

प्रायः मुक्ति नामो भारत की  
कठिन परीक्षा का दिन आया ।  
भूल युद्ध की शिक्षार्थों को  
घोर हिमालय पर पड़ गया ।

जिने मुक्ति का मूल्य प्राण से  
भी बढ़कर प्यारा है ।  
उसे दास्य का नहीं, दास्यों  
का ही डर सारा है ।

पचशील का प्रस्तोता  
पचाग्नि भीषण जानो ।  
पांचजय के विजय घोष  
में भारत की पहचानो ।



## रणागण मे

भला चीन को क्या मिसाल  
जो भारत को सतकारे ।  
सह्यायल कुद्य नहीं धारम-  
यल जहाँ प्रचड प्रचारे ।

भुके हिमालय चाहे भारत  
अविधल कि तु खडा है ।  
आजादी का ध्वज प्रतीक  
गिलरों पर झटल गडा है ।

तु ग श्रु ग साक्षी वीरों के  
मतवाले जोहर के ।  
एक एक ने मारे दस दस  
बाँके वीर समर के ।

कया लिखी है घट्टानों मे  
गहन गभीर बर्णों में ।  
बहा रक्त है जहा उधल उन  
खड्डों धीर धर्मों में ।

घसो घसो घसकर घसो  
रण-शौनस निज धीरों का ।  
पल पल साका किया, छुड़ाया  
धर्म समर धीरों का ।

भागे हुए गत्रु टिड्डीबल  
साक्षी सदा रहेंगे ।  
कथा जयानों के विक्रम की  
युग युग अथल कहेंगे ।



## स्वागत, युद्ध !

सपनाम द्वार पर आया, स्वागत तेरा ।  
 आगत को हमने विमुक्त न घर से फेरा ।  
 हमें अतिथि सत्कार स्वयं करता है ।  
 परित्याग घोर से नहीं तनिक धरना है ।

यद्यपि हम सतत सातिवाद वं हामी ।  
 पर अत्याचार समझ न मुद्ध विरामी ।  
 हम ललकारों से भोत न होने वाले ।  
 हम कालसर्प वं दर्प कुचलने वाले ।

रंकल सगीनों को सीनों पर सहता ।  
 हे खेल हमारे लिए आण पर सहना ।  
 गोले गोली बम पर्पा मे हड़ रहना ।  
 हे पाप युद्ध मे मुँह से 'उफ' तक बहना ।

रण भिक्षा देना धम हमारा धारा ।  
 श्री' शिरच्छेद जिसने बड़ार ललकारा ।  
 गिरिशृ गों की पग की ठोकर से डरना ।  
 बढ़ते चलना नित हृदय लभु वं बहना ।

आघो कर तो दो हाथ न फिर पड़ताभी ।  
 धब फैला युद्ध यिराम, तोच क्या माघो ।  
 राश्रुओं का समर स्वतकुण्ड हो तिरता ।  
 विध्यत धध्र चल पडा न पीछे फिरता ।



## स्वर्ग का आदर्श

उपचुनाय आपोजन  
वर्षा से घुत्ता  
मोल निमत गगन  
प्रमा निशा का घोर तिमिरायरण  
प्रसहवासरूप तारों की झिलमिल सभा भ  
घस रहा प्रचार अभिमान उप  
आकाशगगा क उभय पुलिन पर  
प्रमद ज्योतिषु जों के लोक मे  
निर्वाचन का उरसव  
गाली गलौज विहीन  
लोकतन्त्री पद्धति पर  
रजत रश्मियों के माध्यम से  
हो रहा मत दान,  
सध्या से विहान ।

सुभ्र शांत यातायरण  
जनवाद  
क्यण्टि श्री' समष्टिवाद  
श्रीर श्रीर कई वाद  
उतरे उपचुनाय में परन्तु  
निम्न स्तर का न यहाँ विवाद ।



कृपलानी ओ' मसानो यहाँ  
 लोहिया हैं पर तु वह तुशो बेमानी यहाँ ।  
 जनविरोधी कायकर्मों मे लभन  
 मिथ्याचारी कहाँ यहाँ ?

उरुकाओं के लोक मे  
 क्रांति चक्र  
 दुरभिसन्धि बिना  
 घूमता है सतत  
 लाता है  
 परितन, विवतन  
 नवालोक  
 सहज सौम्य पथ से ।

इतना ही स तर है  
 मत्थ और स्वग मे  
 पृथ्वी का जीवन  
 घँथा है मृत्यु स्वाय से,  
 स्वर्ग में अमरता का  
 शुभादर्श रक्षित है ।

बल बल मे डूबा  
 लोकतंत्र का जो स्वयं रथ  
 चक्र धी भराए घँती जा रही हैं कथम मे  
 उनके हेतु प्रेरणा का पु भ  
 कहीं धीर नहीं ।  
 ऋष्य दृष्टि करो  
 धीर देखो वह अपूर्ण दृश्य  
 वियो यही धादणी ।

मानवता के उद्धार का पथ  
होगा प्रदर्शित ।

प्रगतिरिक्त का सबाधरण  
करो धरती पर धरण ।  
सत्य जीवन,  
असत्य मरण !



## हेमरशोल्ड !

युग कल्प सीम त पर सौभाग्य वि दु  
महामानव हेमरशोल्ड !  
मृत भी तुम हो अमर  
सुरभित दिय त  
शवासोच्छ्वास से तुम्हारी सौम्य !

विश्व जनसेवा का महान अत  
तुमने निभाया, होम प्राण  
आहुति दे किया सफल  
जीवन का भव्य मिशन ।  
किया विफल  
विश्वशांति के अहेरियों का  
निर्बल प्रयास ।

तुम धन्य, धन्य धरा पूत,  
जाया तुम सा सपूत  
पुण्य प्राण हेमरशोल्ड  
धरती आकाश  
अंतरिक्ष अभियान के तुम्हारे  
हैं साक्षी सभी  
पृथ्वी ने मिटा दिये हों  
चाहे समस्त विश्व ।

[ प्रतिवेदन के स्वयं

पौंछ दिया हो पावन रक्त  
 रोती बिलसती उस रजनी के अचल से  
 प्यस्त हो बिलरा जहाँ  
 पापुपात्र तव महामना ।

मित रहा ठोर नहीं आज  
 उस घोम्बे को,  
 फौक रहा धून यह  
 धर धर की प्रांगण  
 साँझिन, उपेक्षित,  
 विमर्दित,— अमाजित पाप  
 उसे खा रहा है तिल तिन ।

मनहती मबिलियों से  
 उड़ गये पतित बुध्ट,  
 पड़्य'त्री,  
 गूग्य साँप साँप रगमच  
 केवल हो गेप तुम्हों  
 बेवोपम परम पुरुष ।

झारती उतारती दिग्बुए,  
 तुम्हारी निरप  
 क्षण क्षण पूजित  
 अनुप्यता के प्रांगण मे  
 अपूव व्यक्तिव वह  
 धारण कर गति रश्मियों का घर रत्नमुबुट ।

२ है घघेर नहीं

दुनियां मे,

मिन्नता है फल अथय

शुभाशुभ कर्मों का,

ईसा मर कर भी रहते अमर

जीवन् भी नरपशु होते हैं नि शेष किन्तु ।



## गुटर गू

बोड़ा बबूतरों का  
'गुटर गू' करता  
उतर भाषा  
घर के विद्यवाजे  
यगुल की छाया तले  
किरण पर विधिल  
हूषते नक्षत्रों सा ।

कता विज्ञान के किगोर छात्र  
मूक स्तम्भ,  
वाग्मिता पराबिता—  
'कोनसी जयान  
ग्रहलेवतन !  
अतर्राष्ट्रीय अग्रजेती तो न है कवावि  
ससृत्त, नहीं नहीं  
जमन, फ्रेग्च, रशियन, नहीं नहीं  
उबूँ, पशियन, अरघी, नहीं नहीं  
समिल, सेलगू, घगला, हिन्दी, नहीं नहीं  
कोन तव भाषा विहग ?  
कोन स्वर ध्वनित अ ग,  
साल पर जिसकी है नृत्यशील रोम रोम ?'

'समस्त सकीर्ण भला  
 भाषा भणिति यह ?  
 सर्वांग पूरण है, समय  
 ज्ञान विज्ञान के सूक्ष्म सत्य  
 इतिहास पुराण का सत्य  
 इसमें प्रकट,  
 दास्य शेष नहीं कोई एक  
 मम जिसका न हो सके व्यक्त  
 स्वराष्ट्र की सांस्कृतिक सपना  
 अक्षयकोष  
 भावों ओ विचारों का  
 रक्षित है इस अमूल्य रत्नागार में ।

'सुम बेचारे  
 राष्ट्रचेतना विहीन  
 भावात्मक एकता का स्वप्न लिये बोलते  
 सशय की तुला पर निज भाषाओं को तोलते  
 आत्मविश्वासहीन  
 अकिंचन, अज्ञ, दीन  
 राष्ट्रभाषा की बात तुम्हें  
 शोभा नहीं वेती यद्यु !

'बील के रूपट्टे में  
 जीवन का उपाहार  
 चलेगा कुछ ही दिन ।  
 दोते प्राये भार परायी भाषाओं का  
 सदियों से, मत करो बात

सृष्टि की  
 तस्कारों से जो भोतभोत  
 नितमें रहते युग-धर्म निहित  
 युग कर्म विहित जो  
 प्राणयान,  
 जो यौवन की घासपा  
 समाज का दर्पण  
 त्रिसमें दप मुत्तर  
 व्यतीत के शौर्य पराक्रम का पापन ।

'छोड़ी, छोड़ो वह चर्चा  
 चर्चा करो  
 मूर्तिका के टेलों की ।  
 रत्नमूर्ति के चरणों में  
 विधाम प्राप्ति तोभाग्य  
 भाग्य में नहीं सुझारे तात !  
 बात यह निश्चित ।'

उठ गये कबूतर युग लोल पर  
 नभ मे, दूर दूर अति दूर !  
 'गुटरगू' अथहीन स्वर गु जित ।  
 मूक स्तब्ध सुधीजा, छात्र चकित,  
 विस्मित जन भन, विस्फारित नयन पया ।





## कैनेडी के निधन पर

कौन हत्यारा तुम्हारा  
कर गया तुमको शर,   
तुमको दुलारा विश्व का ?

वदना का अर्घ्य  
श्रद्धा का नमन  
स्मृति में तुम्हारे  
बरसा करेंगे दात सट्टक सयत्सर !  
श्री महाप्राण सौम्य कैनेडी !  
लिकन से लिक जुडा जिनकी परपरा का ।

उस अभागे को न था ज्ञान,  
न अपने बुद्धित्य का अनुमान,  
अथवा विश्व सौमनस्य की हत्या पर दुवह भार  
तुम पर फायर कर  
वहन यह करता न कदापि ।  
तथ्य यह सुनिश्चित है  
आज जब विश्व के महान राष्ट्र  
सशम और सदेहों से जजरित  
गस्त्रीकरण के बोझ से आक्रान्त,  
विनाश के कगार पर,  
चिपित भ्रूकु चित  
विचारमग्न वतथ्यमूढ़ लडे ।

दाशुता का मुसौटा  
 होगया उसका स्पर्ध ।  
 मिटाने के प्रयास में  
 तुम्हें देगया अविनश्यरता का धरदान  
 उस भाग्यहीन नराधम का ध्वजपात ।  
 भायो भवन्तर,  
 देने दिने प्रलयकीति निरोरनों की माला में  
 तुम्हें स्थापित कर होगये वृत्तकृत्य ।

अपूर्व आश्चय !  
 ईर्ष्या द्वेषपूर्ण जग में हठात्  
 प्रस्तुत हुआ तुम्हारे अयसान से  
 अद्भुत मंत्री भाव,  
 घ्यास हुई एक समयेदना  
 गत्र मित्र में समान !  
 दिया अयुमोक्षन द्वि लोचन ने वसुधा के ।

एक-मरण उभय पक्ष  
 बढ़ा रहे थड़ा सुमन  
 पुण्य स्मृति को तुम्हारी  
 अनुक्षण, हे अलख ज्योति !

"बातायन" पाण्डिकै  
 ५, डाक बॉ- गानेर



## कवि और काव्य

कवि को काव्य इष्ट  
 काव्यालोचन की हो यमों उसे चाह ?  
 सत्यशोध का पवित्र  
 मनीषी कवि  
 बहुधा रहता अत्यक्त  
 विषय यस्तु के पीछे  
 गोपित भावों और विचारों की छाया में ।  
 प्रायः तु वरतम गोस्त्रियां  
 न गाई जाती कवि कठों से ।  
 ये रहतीं चिर मौन  
 अमुद्रित  
 देख न पातीं ये प्रकाश दिनमणि पा ।  
 कोलाहन साहिष्य हाट का  
 करता उनको विश्रम,  
 आत्मगोपन का अघनातीं ये माय  
 सहज सीमा-श्रृंखलु मत्वर ।

उष काल की पुष्प  
 छिपा लेती स्वर्णिल रमणीय हृदय जगती व ।  
 कवि कूहरे में ही पाता पोषण,  
 विस्मृति में विराम  
 अभिराम अभोष्मित ।

कीर्ति कामना ठगे उसे क्यों  
 वीणायादिनि के घरलों मे  
 जिसका बाणोनाद समन्वित ।  
 विजय पराजय अनपेक्षित हूँ  
 गीतों में खोया पलता कवि ।





